अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अगस्त–2023

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां | अंक–चौथा | अगस्त–2023

4 **शब्द**
5 **परमात्मा**
31 **भ्रम**
33 **विदाई संदेश**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **ज्योति सरदाना व डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 257 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

मन मंदिर में आओ कृपाल जी

मन मंदिर में आओ कृपाल जी, मन मंदिर में आओ,
मुझको गले लगाओ कृपाल जी, मन मंदिर में आओ, x 2

1 सब पर दया करी प्रभु तुमने, समदर्शी है नाम तुम्हारा, x 2
गणका गीध अजामिल जो भी, चरन शरण में आया तारा, x 2
तुम पारस मैं लोहा सतगुरु, x 2 सोना मुझे बनाओ,
मुझको गले लगाओ .....

2 तुमको कुछ भी कठिन नहीं है, तुम त्रिलोकी के स्वामी, x 2
रख दो सिर पर हाथ दया का, घट-घट वासी अंतरयामी, x 2
जन्म-मरण के इस चक्कर से, x 2 अब तो मुक्त कराओ,
मुझको गले लगाओ .....

3 भक्ति भाव के भूखे सतगुरु, सबको गले लगाया तुमने, x 2
जिसने तुझे पुकारा सतगुरु, संकट मुक्त कराया तुमने, x 2
युगों-युगों से भटक रहा हूँ, x 2 अब तो राह दिखाओ,
मुझको गले लगाओ .....

4 मैं हूं पापी कोट जन्म का, भूला जीव तुम्हारा, x 2
अब न भेजो और दवारे, मैं दुखियां हां भारा, x 2
भूली आत्मा भटक रही है, x 2 'अजायब' को घर पहुंचाओ,
मुझको गले लगाओ .....

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

परमात्मा

आमतौर पर लोग मुझसे पूछते हैं कि आपकी जन्मतिथि क्या है? मैं बताया करता हूँ कि मेरी तीन जन्मतिथियाँ हैं, पहली – जिस दिन मैं शारीरिक रूप से पैदा हुआ। दूसरी – जब मैं सात साल पहले अंदर अपने गुरु से मिला। तीसरी – जब मैं शारीरिक तौर पर अपने गुरु महाराज सावन सिंह जी से मिला।

सभी सन्त कहते हैं कि ऐसे इंसान के चरणों में जाएं जिसने अपने अंदर **परमात्मा** को प्रकट कर लिया हो। मुझे जो दात अपने गुरु महाराज सावन सिंह जी से मिली उसे मैंने खुले दिल से बाँटा। मैंने एक पल भी ऐसा नहीं सोचा कि मैं कुछ कर रहा हूँ, ये महाराज ही हैं जो सब कुछ कर रहे हैं। कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि हमने 'नामदान' आपसे लिया है लेकिन कभी–कभी हमें आपके अंदर महाराज सावन सिंह जी दिखाई देते हैं। मैं उनसे कहता हूँ ऐसा इसलिए है कि वे मुझमें हैं और मैं उनमें हूँ।

दया **परमात्मा** के पास वापिस जाने का रास्ता है। सन्त कहते हैं कि हम 'शब्द' से ज्यादा दुनिया से प्रेम करते हैं। कुछ लोग परमात्मा के आगे प्रार्थनाएं करते हैं कि वह हमें दुनियावी चीजें दें अगर परमात्मा उन्हें दुनियावी चीजें नहीं देता तो वे कहते हैं कि **परमात्मा** कहाँ है? परमात्मा सो रहा है। जब हमारा मकसद हल हो जाता है तो हम कहते हैं कि परमात्मा महान है। जब कोई मर जाता है तो हम कहते हैं कि परमात्मा निर्दयी है। अगर आप सोचते हैं कि यह सब **परमात्मा** कर रहा है अगर वह आपको कुछ देता है या फिर वापिस ले लेता है तो आपको क्या परेशानी है? प्रेम देना जानता है, प्रेम त्याग है; त्याग ही भक्ति है।

जब आप अपने आपको किसी के आगे समर्पित कर देते हैं तो वह आपके लिए कुछ भी त्याग कर सकता है लेकिन हम समर्पण नहीं करते। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''अगर आप **परमात्मा** को पाना चाहते हैं तो अपना तन, मन, धन और सब कुछ परमात्मा को समर्पित कर दें।'' आप किसी को परमात्मा की आत्मा समझकर प्रेम करते हैं तो आप बंधन में नहीं बंधेंगे अगर आप उससे शरीर के कारण प्रेम करते हैं तो आप बंधन में बंध जाएंगे।

कल एक औरत ने मुझे फोन पर बताया, ''मेरा बेटा मर गया है, मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ और मैं उससे मिलना चाहती हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''तुम उससे क्यों मिलना चाहती हो? वह इस जन्म में अपने पिछले लेन–देन खत्म करके अपने रास्ते पर चला गया है।'' उस औरत ने कहा, ''मैं उससे मिलना चाहती हूँ, आप जो कहेंगे मैं वह सब करूँगी।''

मैंने उसे जवाब दिया, ''ठीक है। अगर तुम वहाँ तक पहुँचती हो और उसका पुर्नजन्म नहीं हुआ तो तुम उससे मिल सकती हो लेकिन तुम्हें 'नामदान' मिला हुआ है ऐसा करने से आज तक तुमने नाम की जो कमाई की है वह खत्म हो जाएगी।'' थोड़ी देर बाद उसका फोन आया कि मैं गलती कर रही थी। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं:

साचु कहौ सुन लेहु सभे, जिन प्रेमु कीओ तिन ही प्रभु पाइओ।

चाहे आप किसी भी धर्म के हैं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप प्रेम से **परमात्मा** को प्राप्त कर सकते हैं। जो प्रेम करना नहीं जानते, वे परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते।

क्राइस्ट ने कहा, ''अगर आप मुझसे प्रेम करते हैं तो मेरे कहे अनुसार चलें। जैसा प्यार मेरे पिता ने मुझसे किया है, मैं आपसे वैसा ही प्यार कर रहा हूँ। मैं अपने पिता के कहे अनुसार चलता रहा हूँ।''

मेरा ट्रान्सफर रावलपिंडी हो गया, वहाँ के सब लोग जानते थे कि यह गुरु का शिष्य है, यह रोजाना छह घंटे अभ्यास में बैठता है। यह बात बीबी हरदेई तक भी पहुँची, इससे पहले वह मुझे नहीं जानती थी। बीबी हरदेई ने कहा कि मैं भी रोजाना छह–सात घंटे अभ्यास में बैठूंगी फिर इनसे मिलूँगी। कई महीने बीत गए, वह मुझसे मिलने नहीं आई। जब मेरे बेटे की मृत्यू हुई उस समय बीबी हरदेई अपने पति के साथ मुझसे मिलने आई।

मेरा बेटा काफी बीमार था, डॉक्टर को बुलाया गया। मैंने डॉक्टर से कहा, ''तुम इसे जो दवाई देना चाहो दे दो ताकि इससे हमारा लेन–देन खत्म हो जाए।'' डॉक्टर ने दवाई देकर कहा, ''यह सुबह तक ठीक हो जाएगा।'' मैंने डॉक्टर से कहा, ''आप बाहर इंतजार करें यह जा रहा है।'' मैंने अपने बेटे की तरफ देखा और उसने शरीर छोड़ दिया।

उस समय बहुत से लोग मुझसे मिलने आए। राजा राम सर्राफ और उनकी पत्नी बीबी हरदेई (ताई जी) उस समय शोक प्रकट करने आए। वे लोग हैरान थे कि मेरे बेटे के जाने के बाद मेरे चेहरे पर कोई गम नहीं था। इस बात का राजा राम सर्राफ पर बहुत गहरा असर हुआ। यही बात राजा राम सर्राफ को मेरे करीब लाने का कारण बनी।

पूर्ण सन्त केवल शरीर नहीं होते। इंसानी जामें में काम करते हुए सन्त के तीन रूप होते हैं। पहला–शारीरिक रूप में हम जिसे गुरु कहते हैं उसके अंदर बहुत नम्रता होती है, वह हमें जिंदगी का नैतिक मूल्य समझाता है। दूसरा–वह सच्चा और पूर्ण इंसान होते हुए कुछ और भी है। जब शिष्य शरीर की चेतना से ऊपर उठकर उसे अंदर देखता है, उससे बातचीत करता है तब वह उसे गुरुदेव के रूप में जानता है। तीसरा–जब शिष्य पूर्ण गुरु से नाम ले लेता है तब वह सीख जाता है, कैसे शरीर को अपनी मर्जी से छोड़ा जाए। गुरु का प्रकाशमान रूप हमेशा शिष्य के साथ रहता है, सतगुरु उसे सारे मंडल पार करवाकर सतपुरुष में मिलवा देता है।

कुछ साल पहले मैं रात को छत पर खड़ा था। हुजूर ने दया करके मुझे अपने पास बुला लिया। मैंने आपके आगे सिर झुकाकर पूछा, ''जिन लोगों ने अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया है वह तो ठीक है लेकिन जो अभी चलना भी नहीं सीखे उनका क्या होगा?'' हुजूर ने कहा, ''कृपाल सिंह, क्या तुम चाहते हो कि मैं नामदान देना बंद कर दूँ? हर पिता चाहता है कि उसके बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाएं। मुझे उस समय की इंतजार है जब ये अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे।''

हुजूर शारीरिक रूप छोड़ चुके हैं लेकिन वे हमसे दूर नहीं। सतगुरु जिन्हें नामदान दे देते हैं, उनके अंदर बैठ जाते हैं। सतगुरु जीते जी और अंत समय तक आपके साथ हैं।

मैं सच की खोज में था। मेरा कुछ बैकग्राउंड भी था लेकिन जीवन की पहेली को कैसे सुलझाया जाता है, मैं यह सीखना चाहता था? जब मैं अपने गुरु सावन सिंह जी के चरणों में पहुँचा तो उन्होंने मेरे अंदर की आँख खोली। सन् 1914 के करीब ऑफिस में काम करते हुए बिना किसी कारण मेरी आँखों से आँसू बहने लग जाते, टेबल पर रखे हुए कागज भीग जाते। मैं अपने आपसे पूछता, ''हे परमात्मा! यह क्या हो रहा है?'' जब तक जीवन की पहेली सुलझ न जाए तब तक इंसान को शान्ति नहीं मिलती।

दुनिया, दुनियावी चीजों के लिए बहुत रोती है लेकिन **परमात्मा** के लिए कौन रोता है? यह दर्द उन काले बादलों का है जो बारिश के आने का वायदा करते हैं। जिन्हें परमात्मा से मिलने की इच्छा है उन्हीं के दिल में परमात्मा के लिए दर्द है। गुरु रामदास जी कहते हैं कि ऐसी आत्माओं का दर्द परमात्मा ही जानता है।

आप अपने गुरु को उसी स्तर तक जानते हैं जहाँ तक उसने अपने आपको आपके आगे प्रकट किया है। गुरु इंसानी स्तर पर काम करता है

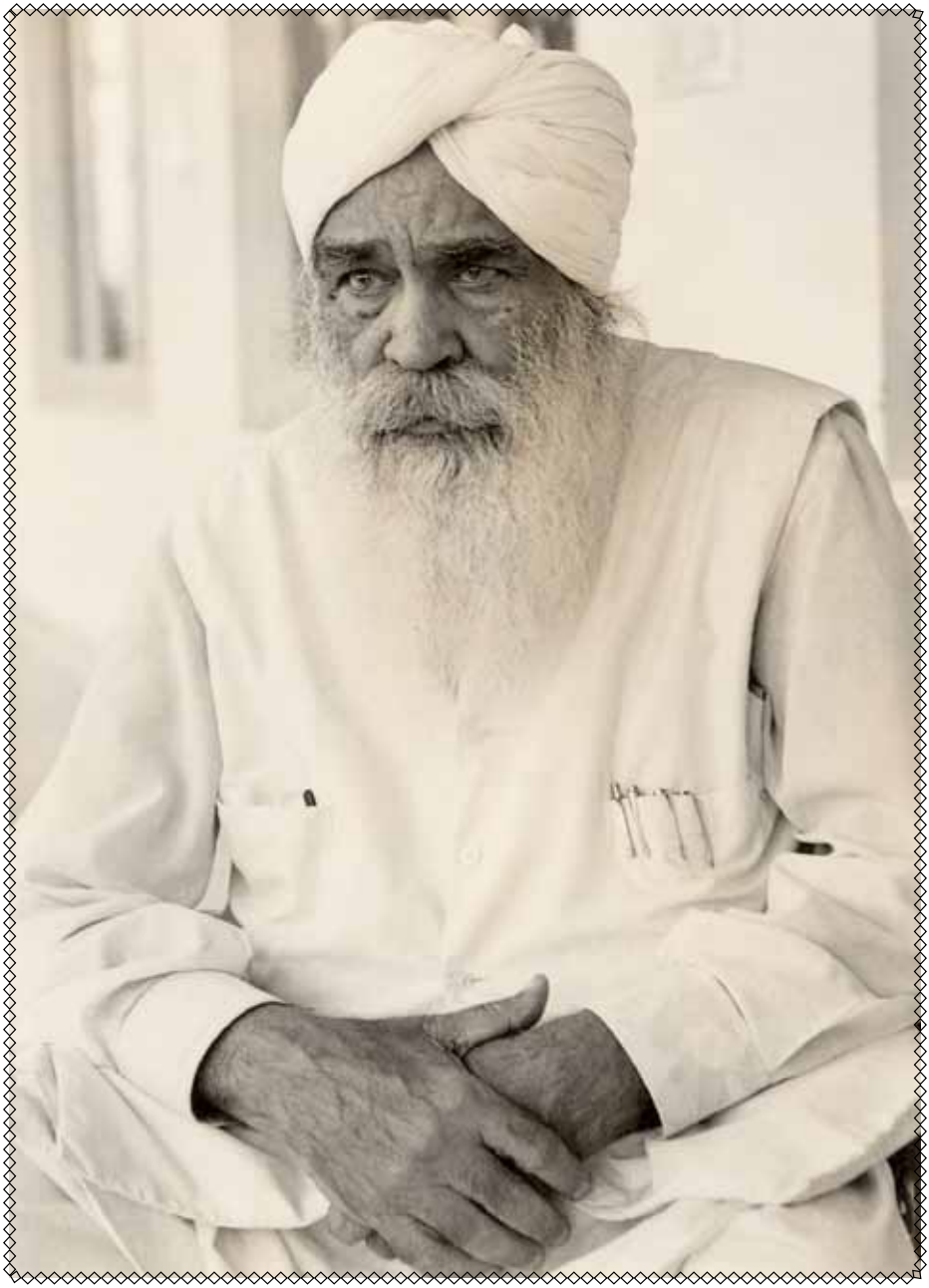

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

उसमें इंसानी भावनाएं होती हैं लेकिन वह यह नहीं कहता कि मैं आया हूँ; वह कहता है, ''मुझे **परमात्मा** ने भेजा है।''

जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता था, तब भी मैं यह सोचा करता था कि मैंने आज दिन भर क्या–क्या किया है? धीरे–धीरे सब याद रहने लगा, तब मैंने देखा कि हर समय मेरा दिमाग काम करता है। जब मैंने एक–एक करके फालतू बातों को दिमाग से निकाला, तब मैंने अपने अंदर एक आर्शिवाद महसूस किया और मन की दृष्टि साफ हो गई।

दुनियावी चीजें क्या हैं और **परमात्मा** क्या है? मुझे इस बारे में सोचने के लिए सात–आठ दिन लगे। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि परमात्मा पहले और दुनिया बाद में। अगर आपके सामने कोई मिशन है तो आप मंजिल के नजदीक पहुँच जाएंगे, जिससे हम इंसानी जामें का फायदा उठा सकें।

सन् 1921 में मेरी नौकरी भारतीय आर्मी रेजीमेंट की अकाउंट ब्रांच में लग गई। वहाँ एक अर्दली मेरा खाना बनाता था। आधी रात को भजन पर बैठना मेरा रोज का कार्यक्रम था। मैंने अर्दली को सख्त हिदायत दी हुई थी कि खाना बनाते हुए वह किसी को रसोई में न आने दे और उस समय **परमात्मा** के भजन बोले।

एक रात नकारात्मक सोच मेरे भजन में रूकावट डालने लगी तो मैंने अर्दली को उठाकर पूछा, ''क्या रात को खाना बनाते वक्त कोई उसके साथ रसोई में था?'' उसने कहा, ''नहीं।'' लेकिन बाद में वह मान गया। जहाँ पर पहले ही बहुत गंद हो वहाँ थोड़ा और गंद होने से कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन साफ जगह पर गंद का एक निशान भी साफ दिखाई देता है।

मैं जब अपने गुरु के चरणों में गया तो लोगों ने मुझसे पूछा कि आपके गुरु कितने महान हैं? मैंने उन लोगों से कहा कि मैं यह तो नहीं जानता कि वह कितने महान हैं लेकिन वे मुझसे बहुत ज्यादा ऊपर हैं। हम केवल उतना ही जान सकते हैं जितना वह अपने बारे में प्रकट करते हैं।

मैं अपने गुरु के साथ काफी समय रहा। मैं जब भी उनके साथ बैठता, उनको सुनता और जहाँ तक मुझे ख्याल है कि मैंने अपने गुरु से कभी कोई सवाल नहीं किया। जब मुझे नामदान मिला तब मैंने उनसे कुछ सवाल पूछे थे। गुरु हमेशा हर सवाल का जवाब देते हैं लेकिन हम अपने आपमें इतने खोए होते हैं कि वे जो जवाब दूसरों को देते हैं, हम उस पर अमल नहीं करते।

मैंने अपने गुरु से कहा कि मैं एक पारिवारिक इंसान हूँ, मुझे नौकरी भी करनी है, मुझे अभ्यास में कितना समय देना चाहिए? आपने कहा कम से कम छह घंटे और इससे ज्यादा जितना समय दे सको। हमने गुरु की आज्ञा का पालन करना है। मैं सुबह तीन बजे उठकर अभ्यास में बैठ जाता। मैंने अपनी पत्नी से कह रखा था कि वह मेरा खाना रखकर चली जाए। मैं सुबह नौं बजे खाना खाकर आफिस चला जाता। सबसे व्यस्त आदमी भी समय निकाल सकता है। आखिर हमारे पास चौबिस घंटे हैं।

जहाँ चाह वहाँ राह।

मुझे गुरु की तरफ से आदेश था कि लाहौर ही नहीं और दूसरी जगहों पर जाकर भी सतसंग दें। अमृतसर के लिए रविवार का दिन निश्चित किया गया। उस रात मेरी बेटी मृत्यु शैया पर थी, मैंने अभ्यास में अपने गुरु को देखा। गुरु ने कहा, ''मैं तुम्हारी बेटी को लेकर जा रहा हूँ।'' मैंने कहा, ''शुक्रिया, आप इसे ले जाएं।'' वह मर गई। मैंने सुबह जाकर सतसंग की ड्यूटी निभाई। हमने गुरु का कहना मानना है, गुरु सब कुछ देख रहा है।

मेरा बड़ा बेटा जिसका पत्र आज भी आया है वह बीमार था। डॉक्टर ने मुझसे कहा कि इसका जीवन खतरे में है। अच्छा होगा कि आप तीन दिन की छुट्टी ले लें। उस समय मैंने छुट्टियाँ ले रखी थी लेकिन रविवार को मेरी ड्यूटी अमृतसर में सतसंग देने की थी। मैं अपने बेटे को गुरु के भरोसे छोड़कर चला गया। उस दिन बहुत गर्मी थी तकरीबन 11 बजे

सतसंग खत्म हुआ। अमृतसर से ब्यास थोड़ी दूर है तो मैंने सोचा कि गुरु के दर्शन कर लिए जाएं। लाहौर वापिस आने की बजाय मैं ब्यास चला गया। मैं वहाँ तकरीबन 1 बजे पहुँचा।

किसी प्रेमी ने गुरु को मेरे बारे में बताया तो आपने कहा ठीक है उसे बुलाओ। मैं आपके पास गया। आप उस समय लेटे हुए थे मुझे देख उठकर बैठ गए। आपने पूछा, ''तुम्हारा बेटा कैसा है?'' मैंने आपको कभी नहीं बताया था कि वह बहुत बीमार है। ऐसा लग रहा था कि आप बहुत ज्यादा चिंता में हैं फिर आपने कहा, ''कृपाल सिंह, तुमने सारी चिंता मुझ पर छोड़ दी जो मुझे लेनी पड़ी।''

एक बार ऐसा हुआ कि लाहौर में मैंने तकरीबन दो हजार प्रेमियों के बीच सतसंग करना था। उस समय मुझे समाचार मिला कि हुजूर लाहौर में किसी जगह आए हैं। स्वाभाविक ही मेरा दिल उड़कर आपसे मिलना चाहता था लेकिन दूसरी तरफ मैं आपके दिए हुए आदेशों से बंधा हुआ था। मैंने सतसंग जारी रखा तकरीबन दो घंटे में सतसंग खत्म हुआ और मैं भागकर उस जगह गया लेकिन हुजूर वहाँ से वापिस ब्यास जा चुके थे।

मैं उसी समय ट्रेन से ब्यास गया, ब्यास पहुँचते–पहुँचते शाम हो गई। मैंने अपने गुरु से कहा कि मुझे नहीं पता कि मैंने ठीक किया है या गलत किया है? महाराज जी ने कहा, ''मैं तुमसे खुश हूँ क्योंकि तुम मेरे कहे अनुसार चल रहे हो।''

गुरु के पास कई तरह के लोग आते हैं। कई अमीर लोग यह उम्मीद करते हैं कि गुरु हमारा स्वागत करें। आप गुरु के चरणों में भक्त बनकर जाएं। कई बार लोग मुझसे प्रश्न करते लेकिन कुछ ऐसा होता कि मेरे द्वारा कहे गए शब्द मेरे गुरु के होते थे। जब आप गुरु के साथ एक हो जाते हैं तो स्वाभाविक ही वह आपके द्वारा काम करता है।

सन् 1931 में मेरा काम तकरीबन नौं महीने के लिए मिलिट्री की यूनिट में गोला बारी की लाईन पर था। हमें बार्डर लाईन पार करने की इजाजत नहीं थी क्योंकि आगे दुश्मनों का ईलाका था। मैं दिन के समय बार्डर लाईन पार करके अभ्यास के लिए जाता था। मेरी शिकायत की गई कि यह बार्डर पार करके जाते हैं और दुश्मन इनका कुछ नहीं कर पाते। वहाँ बम गिरे, तोपें चली। मैंने उस गोला बारी में तीन महीने गुजारे। वहाँ के कई बुजुर्ग लोग अपने परिवार के लोगों को मुझे दिखाने लाते।

जब भारत में अंग्रेज राज कर रहे थे उस समय मैं सतसंग दिया करता था। सतसंग में हिन्दु, मुसलमान सभी धर्मों के लोग आते थे। मेरी शिकायत की गई कि मैं सरकार के खिलाफ बोल रहा हूँ। पंजाब के गुप्तचर विभाग वालों ने मुझे बुलाया। मैंने सोचा कि मैंने कोई गुनाह नहीं किया लेकिन वे अधिकारी हैं, मैं उनके पास गया। वे लोग सादे कपड़ों में सतसंग सुनने के लिए आए और उन्होंने रिर्पोट दी कि यह इंसान को इंसान के साथ जोड़ रहा है। मेरी बाकी की नौकरी में जब भी वह अफसर मुझे देखता अगर वह साइकिल चला रहा होता तो साइकिल से उतर जाता अगर कार में जा रहा होता तो भी रूककर मुझसे मिलकर जाता।

एक बार मैं सतसंग देने के लिए अमृतसर गया। वहाँ हुजूर के आने की उम्मीद थी, सब आपके आने की उम्मीद में बैठे थे। थोड़ी देर बाद संदेश आया कि हुजूर नहीं आ रहे, सबका दिल टूट गया। कुछ लोग चले गए पर मैं वहीं बैठा रहा। उस समय मैंने हुजूर के प्यार में एक कविता लिखी:

तुम पास नहीं कौन सुने मेरी कहानी।
सावन कभी आओ तो सुनो मेरी जुबानी।।

तकरीबन एक घंटे बाद हुजूर वहाँ आ गए। प्यार में बहुत शक्ति है अगर शीशे के पीछे कुछ न रखा जाए तो हम उसमें अपनी शक्ल नहीं देख सकते। इसी तरह प्यार आपको दिखाता है कि गुरु आपके साथ है।

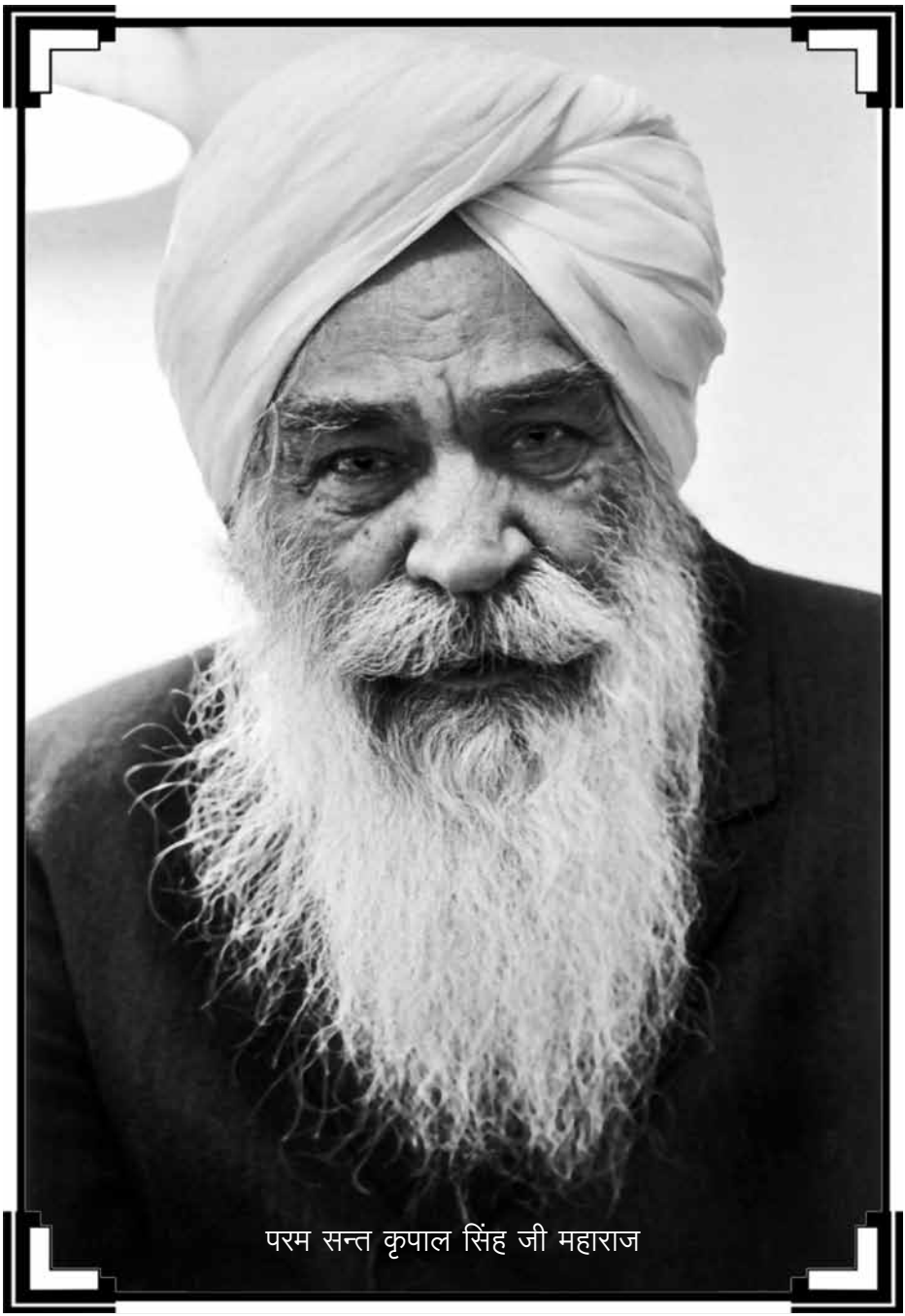

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

एक बार हुजूर मेरे गाँव आए, आप जिस कमरे में रूके थे, आपके जाने के बाद मैंने वह कमरा बंद कर दिया। जब भी कोई उस कमरे में जाता उसे एक किस्म की ध्वनि की आवाज सुनाई देती।

मुझे अपने जीवन की वह घटना याद है कि रेलवे स्टेशन पर मेरी पत्नी का पर्स गुम हो गया। पुलिस ने चोर को पकड़ लिया और उससे पर्स मिल गया। मुझे पुलिस स्टेशन में रिर्पोट लिखवाने के लिए कहा गया। मैंने पुलिसवालों से कहा कि इसकी कोई जरूरत नहीं क्योंकि पर्स मिल गया हैं। उनके जोर देने पर मुझे पहली बार पुलिस स्टेशन जाना पड़ा।

मैंने पुलिस ऑफिसर से कहा कि मैं रिर्पोट दर्ज कराने के पक्ष में नहीं हूँ लेकिन वह नहीं माना। आखिर रिर्पोट दर्ज हुई। बाद में मुझे गवाह के तौर पर कचहरी भी जाना पड़ा। जब मैं कचहरी में गया तो मैंने न्यायधीश से प्रार्थना की अगर आप किसी भी तरह दोषी को माफ कर दें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। जब न्यायधीश ने देखा कि दोषी का पिछला कोई गलत रिकॉर्ड नहीं है तो उसे चेतावनी देकर रिहा कर दिया गया, जिसका परिणाम दोषी और उसके रिश्तेदार हमेशा मेरे आभारी रहे। माफी सभी सद्गुणों से ऊपर है।

एक बार मेरी पत्नी ने मुझे टेलिफोन पर संदेश दिया कि आपका बेटा बहुत ज्यादा बीमार है, आप जल्दी आ जाएं। मुझे रास्ते में एक सतसंगी मिला जो बहुत उदास था। मैंने उससे पूछा, ''तुम्हें क्या हुआ है?'' उसने कहा कि मेरा बेटा तीन हफ्तों से बीमार है। मैंने उससे पूछा, ''तुमने उसका ईलाज करवाया?'' उसने कहा कि मेरे पास ईलाज करवाने के लिए पैसे नहीं हैं। मैंने डॉक्टर को बुलाया उसके लिए दवाई लाया और तीर–चार घंटे वहीं रहा। उसके बाद मैं अपने बेटे को देखने पहुँचा।

एक बार हुजूर ने महावारी सतसंग में मुझे 250 प्रेमियों को नामदान देने के लिए कहा। उस समय मेरे खिलाफ बहुत बड़ा प्रचार किया गया। उस

प्रचार में प्रभावशाली लोग भी शामिल थे। मैं चुप रहा क्योंकि मैं सच्चा था और मैं जानता था कि गुरु **परमात्मा** मेरे साथ है। उस समय हालात ऐसे हुए कि मैं आठ महीने तक अपने गुरु से बात नहीं कर सका।

मेरा बड़ा भाई नामलेवा था। मैंने अपने भाई से कहा अगर तुम हुजूर के पास जाओ तो उनसे पूछना क्या मुझसे कोई पाप हो गया है? हुजूर ने कहा, ''उसने जाने–अनजाने में कुछ भी गलत नहीं किया लेकिन मुझे हैरानी इस बात की है कि उसके साथ इतना कुछ बीता फिर भी वह मेरे पास यह बताने के लिए नहीं आया कि प्रचार फैलाने वाले सही नहीं है।''

मैंने एक बार हुजूर से प्रार्थना कि मुझे आपके कुछ मिनट चाहिए। आपने कहा, ''हाँ, तुम्हारा स्वागत है।'' आपने कमरे का दरवाजा बंद करने के लिए कहा। मैंने आपसे कहा, ''मैं जानता हूँ कि आप मुझमे हैं और आप मेरे हर कार्य को देख रहे हैं।'' आपने क्रोधित होकर कहा, ''इन लोगों ने इस जगह को नर्क बना रखा है।''

अगले दिन मैं हमेशा की तरह सतसंग में पीछे बैठा था। आपने प्रवचन मंच पर बैठकर कहा, ''कृपाल सिंह आओ! सतसंग दो।'' आपके आस–पास के लोग जो पार्टियां बना रहे थे उन्होंने कहा कि हम सतसंग आपसे सुनना चाहते हैं लेकिन आपने कहा, ''नहीं! यही सतसंग करेगा।'' आपने मुझे आज्ञा दी, ''तुम इधर आओ और अपनी बात कहो।''

हैरानी इस बात की है कि एक रात में ही सब कुछ बदल गया। मैं यही कहा करता हूँ कि हुजूर को मेरी निष्कपटता और अपने प्रति सच्चा होना ही प्रभावित करता था। मेरे गुरु ने एक बार मुझे बहुत मूल्यवान कश्मीरी चोगा दिया, आपने उस चोगे को पहले खुद पहना फिर वह चोगा उतारकर मुझे दे दिया, वह चोगा आज भी मेरे पास है। आपने मुझे एक बहुत सजावटी बिस्तर दिया। उस बिस्तर को पहले आपने अपने सिर पर रखा फिर मुझे दे दिया। यह प्रेम की निशानी है, प्रेम कोई कानून नहीं जानता।

मुझे याद है, एक बार महाराज सावन सिंह जी कराची गए, जब आप डेरा ब्यास वापिस आए तो आपने मुझे बताया, ''मुझे अमेरिका जाने–आने की टिकट मिली है। अमेरिकन चाहते हैं कि मैं उन्हें आर्शिवाद देने के लिए चाहे एक दिन के लिए ही अमेरिका आऊँ। मैंने उन्हें जवाब दे दिया है कि मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ इसलिए नहीं आ सकता।'' महाराज सावन सिंह जी ने मुझसे कहा, ''तुम्हें अमेरिका जाना होगा।'' आपकी दया ही काम कर रही है जो आज मैं अमेरिका में हूँ।

मैं सन् 1955 में भी अमेरिका आया था और अब सन् 1963 है मैं फिर आपके बीच में हूँ। मैं आप सबको देखकर खुश हूँ। हम सब **परमात्मा** के नाम में आपस में भाई–बहन हैं। मैं यही कह सकता हूँ कि मैंने अपने गुरु के चरणों में जो सीखा है वह आपके आगे रख दिया है। मुझे आशा है कि आप सब उनकी दया से संतुष्ट होंगे।

सन् 1947 में मैं मिलिट्री में अकाउंट ऑफिसर की हैसियत से काम कर रहा था, जब रिटायर होने लगा तो मेरे साथ काम करने वाले लोगों ने मुझे सलाह दी कि आप पेंशन न लें ताकि आगे नौकरी जारी रख सकें। मैंने उन लोगों से कहा कि मैं अपनी पेंशन में अदल–बदल नहीं करना चाहता। मैं जानता था कि मेरे आगे मेरा मिशन है।

रिटायर होने के बाद मैंने पाँच–छह महीने ऋषिकेश के जंगलो में एकान्तवास लिया। वहाँ लगभग मेरे सोलह घंटे भजन–अभ्यास में बीतते थे। तब मैंने सोचा कि लोगों को कैसे प्रेरित किया जाए कि वे मेरे कहे अनुसार चल सके फिर मैंने सोचा कि तुम खुद क्या कर रहे हो? मैं जब विद्यार्थी था तब भी डायरी रखता था, मैंने फिर डायरी का सहारा लिया। जब मन शान्त होता है तो हम पारदर्शी हो जाते हैं। हम डायरी के द्वारा देख सकते हैं कि हमारी पारदर्शिता कहाँ तक है? जो डायरी नहीं रखते वे तरक्की नहीं कर सकते।

मैंने पश्चिम के टूर में लोगों को सलाह दी कि अपनी परेशानियों का हल अपने ग्रंथों में ढूंढ़ें लेकिन ज्यादातर वही लोग हल ढूंढ़ सकते हैं जो भक्ति के विज्ञान को जानते हैं। दूसरे लोगों के लिए यह एक छिपे हुए खजाने की तरह है।

मुझे पश्चिम में कई राजनीतिक नेताओं से मिलने का मौका मिला। मैंने उन्हें याद दिलाया कि आपका ध्यान रखने के लिए आपको **परमात्मा** के बच्चे मिले हैं। भारत का सिद्धान्त है कि जिओ और जीने दो। जो देश कमजोर है उनकी मदद करनी चाहिए। लाखों लोगों का खून बहाने से क्या फायदा? बहुत से नेता समझ गए और दो जगह का युद्ध टल गया।

बहुत साल पहले मैं कानपुर में एक योगी से मिला। वह कुंभक के जरिए जमीन पर लेटकर अपनी छाती पर रोड रोलर रखकर पूरा भाषण देता था। वह अपने गले में एक मोटी रस्सी बाँध लेता, पचास लोग उस रस्सी को खींचते लेकिन उसे एक इंच भी नहीं हिला पाते थे। उसे जमीन के नीचे छह दिन और छह रात दबाया जा सकता था लेकिन उस पर कोई असर नहीं पड़ता था।

एक दिन मैंने उस योगी से पूछा कि तुम्हारे मन की क्या स्थिति है? उसने जवाब दिया कि मैं जब तक कुंभक में रहता हूँ तब तक तो सब ठीक है लेकिन जब कुंभक से बाहर आता हूँ तो मैं सामान्य परिस्थिति में पहुँच जाता हूँ।

मैं अमेरिका के टूर में कुछ दिनों के लिए लॉस एंजिल्स में रूका। वहाँ एक अंधा डॉक्टर अभ्यास करने के लिए आया, अभ्यास में बैठने के बाद उसने माना कि मैंने प्रकाश देखा है, प्रकाश सभी में होता है।

चर्च में सर्विस करने वाले आध्यत्मिक लोगों से मेरी बातचीत हुई उन्होंने भी इस बात को माना कि जो लोग शरीर छोड़ चुके हैं, उन आत्माओं से संपर्क करना मुश्किल होता है लेकिन इसके लिए आपको

कोई जरिया चाहिए; यह मुश्किल काम है। आप बाहरी आदमी के पास सीधे जाकर बात कर सकते हैं। वह जरिया कई बार बहुत अच्छा स्त्रोत नहीं भी हो सकता अगर वह हो तब भी वे ऊँची आत्माएं केवल आपको उसी मंडल तक मार्गदर्शन कर सकती है जहाँ तक उन्होंने अपने आपको विकसित किया है और कई बार यह सही नहीं होता।

जब मैं लंदन गया तो मैं एक आध्यात्मवाद से मिला जो आत्माओं को बुलाता और मिलता। उसकी फीस तीन पाउंड थी। मैंने कहा कि मैं देने के लिए तैयार हूँ। हम वहाँ गए और उस कमरे में एक घंटे से ऊपर रूके लेकिन कोई नहीं आया। ऐसा कई बार दिखता है कि वातावरण का प्रभाव अनुकूल नहीं है। अगर आप आत्माओं से संपर्क करना चाहते हैं तो क्यों न इस शरीर की चेतना से ऊपर उठें और उस मंडल तक पहुँचे।

मैं एक दिन युनिटी चर्च गया। मैंने वहाँ के मुखिया से पूछा, ''आप क्या सिखा रहे हैं?'' उस मुखिया ने मुझे एक पत्रिका दी, मैंने वह पत्रिका पढ़ी। उस पत्रिका में लिखा हुआ था कि क्राइस्ट, जीसस से पहले हुए हैं। जब मैं पिछली बार सन् 1955 में यहाँ आया था तो एक आदमी ने मेरे सामने सवाल रखा, ''क्राइस्ट कब वापिस आ रहे हैं?'' मैंने उस आदमी से कहा, ''क्या क्राइस्ट कभी तुम्हें छोड़कर गए हैं?'' क्राइस्ट ने कहा है, ''मैं दुनिया के अन्त तक तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा।'' जब क्राइस्ट ने हमें छोड़ा ही नहीं तो आने का प्रश्न कहाँ उठता है?

क्राइस्ट, परमात्मा पावर गुरु पावर है जो समय–समय पर आकर बच्चों को इंसानियत का मार्ग दिखाता है। क्राइस्ट सदा है, हम सब उसके बच्चे हैं। कोई भी जागा हुआ इंसान यह अनुभव कर सकता है कि परमात्मा पावर सदा बनी रहती है। यह एक सामान्य आधार है जहाँ सभी धर्मों के लोग इकट्ठे बैठकर परमात्मा को याद कर सकते हैं। हमने ग्रंथों से असली

बात को समझना है लेकिन उन्हें समझाने के लिए हमें कोई ऐसा चाहिए जिसने इस राह पर चलकर अनुभव हासिल किया हो।

हिन्दू मुझसे पूछते हैं तो मैं उन्हें उनके ग्रंथो में से ही कुछ बताता हूँ। मैं वैंकूवर में सिक्खों के गुरुद्वारे में गया, मैंने उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बारे में बताया। मैं हर किस्म के चर्चों में गया और वहाँ के पादरियों से भी मिला और यही बताया कि सच, सच है। आप डिग्री प्राप्त करने के लिए स्कूलों–कालेजों में जाते हैं। जब आपके हाथ में डिग्री होती है तो उस डिग्री पर एम.ए. लिखा होता है लेकिन यह नहीं लिखा होता कि यह डिग्री आपने ईसाईयों या हिन्दुओं के कॉलेज से ली है। इसी तरह भक्ति में भी डिग्रियाँ है। यह बात पहले भी ग्रन्थों में बताई गई है लेकिन हम इस बात को भूल चुके हैं। हमें कोई ऐसा चाहिए जिसे इस राह का पता हो, बस! वही हमें यह अनुभव दे सकता है।

मुझसे किसी ने पूछा, ''क्या आपका कोई उत्तराधिकारी है जिसे आप शिक्षा दे रहे हैं?'' मैंने कहा, ''मैं बहुत लोगों को शिक्षा दे रहा हूँ, देखते हैं परमात्मा किसे चुनता है?'' गुरु में भी परमात्मा ही काम कर रहा होता है। जब **परमात्मा** चाहेगा वह अपने आप ही आ जाएगा। मैं आप सबके चुने जाने की आशा करता हूँ लेकिन आप सबको उस स्तर तक आना होगा। मैं चाहता हूँ कि आप सब प्रतिनिधि बनें।

टूर के दौरान मैं टॉयरोल के लोगों से मिला। इटली वालों ने टॉयरोल के कुछ इलाकों पर कब्जा किया हुआ था। वे विद्रोह कर रहे थे और उनके पास बम्ब और दूसरे हथियार भी थे। मैं गर्वनर से मिला हमारी एक घंटे तक बात हुई। गर्वनर ने कहा, ''मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करना चाहिए?'' मैंने उससे कहा, ''थोड़ा रूकें रोशनी चमकेगी।'' विद्रोहियों के साथ बातचीत से सब ठीक हो गया, युद्ध नहीं हुआ।

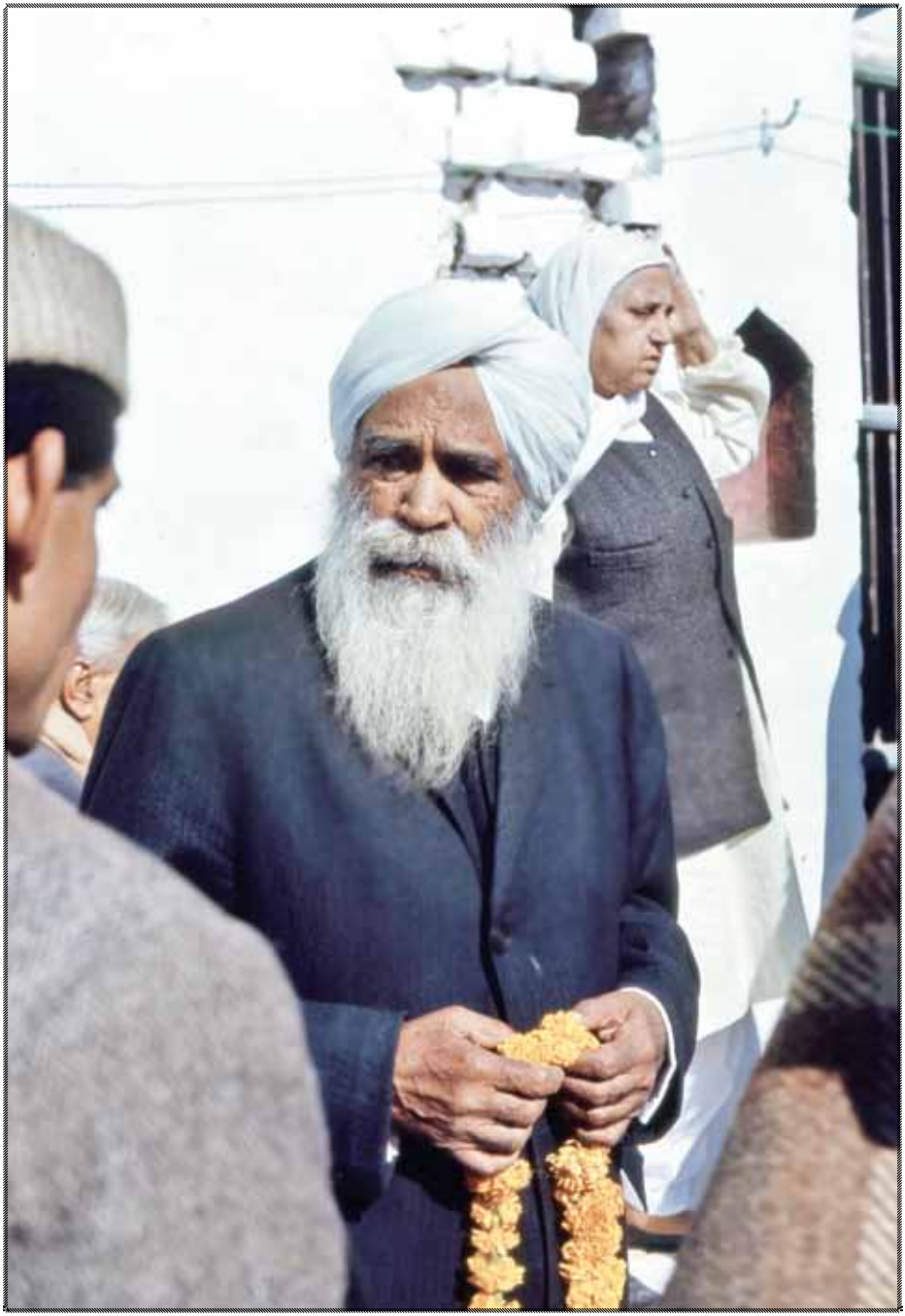

जब मैं पश्चिम गया उस समय पूर्व और पश्चिम वालों के लिए एक सभा रखी गई। मुझे पूर्व का प्रतिनिधि बनकर बुलाया गया और पश्चिम का प्रतिनिधि बनकर किसी को फ्राँस से बुलाया गया लेकिन आखिरी मिनट में वह सभा में नहीं पहुँच सके। उस सभा को आयोजित करने वालों ने मुझसे कहा हम आप पर पूर्व और पश्चिम दोनों तरफ का फैसला छोड़ते हैं। मैंने कहा कि पूर्व पूर्व है और पश्चिम पश्चिम है। ये दोनों कभी नहीं मिल सकते लेकिन **परमात्मा** एक है। सारी रचना परमात्मा का घर है इसमें कोई पूर्व पश्चिम नहीं। सभी देश परमात्मा के घर के कमरे हैं।

अभी हाल ही में मुझे एक जरूरी संदेश मिला कि कोई शिष्य बहुत ज्यादा बीमार है। मैंने अपने संदेश में उन लोगों को लिखा कि आप उस बीमार से कहें कि वह अंदर ध्यान लगाए। उन लोगों ने मुझे वापसी जवाब दिया कि आपका दिया हुआ संदेश बीमार तक पहुँचा दिया गया है। कुछ ही घंटों में उस बीमार की हालत सुधरने लगी और वह ठीक हो रहा है। यह संदेश केवल टेलिफोन पर ही दिया गया था। आप देखें**!** हजारो मील की दूरी पर भी गुरु पावर रक्षा करती है। जिस शरीर में **परमात्मा** प्रकट है वह पवित्र है, यह सम्मान की बात है।

मैं आपको एक और वाक्या बताता हूँ कि अमेरिका में वाल्टर क्रिल नाम का आदमी था। जब मैंने उसे नाम दिया तो उसे बहुत अच्छा अनुभव हुआ लेकिन कुछ समय बाद वह बीमार पड़ गया। जब इंसान की ऐसी स्थिति होती है तो वह परेशान हो जाता है। उसने मुझे लिखा कि डॉक्टर उसे मीट खाने और शराब पीने के लिए मजबूर कर रहे हैं। मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि माँसाहारी खाना उसकी मदद नहीं करेगा उसे शाकाहारी खाने पर ही रहना चाहिए।

कुछ महीनों बाद उसने लिखा कि वह लाचार हो गया है और साँस नहीं ले पा रहा। डॉक्टर उसे मीट खाने पर मजबूर कर रहे हैं। मैंने उसे

उत्तर में लिखा तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करो। मैं जब अमेरिका गया तो सन्त बारबरा पहुँचा। डॉक्टरो ने उम्मीद छोड़ दी थी और वह मृत्यु के दरवाजे पर था। वायलेट गिलबर्ड उस अस्पताल की एक सतसंगी नर्स थी, वह मुझसे मिली और उसने मुझे वाल्टर क्रिल के बारे में बताया कि वह अस्पताल में मर रहा है। वह रोता है और यह भी कहता है, ''मैंने अपने गुरु का कहना नहीं माना। गुरु अब अमेरिका में हैं लेकिन मैं किस तरह उन्हें अपना चेहरा दिखाऊँ?'' क्या आप उससे मिलने जाएंगे?

मैंने कहा, ''हाँ, मैं उससे मिलने जाऊँगा।'' जब मैं उसके कमरे में पहुँचा तो नर्स गिलबर्ड ने उससे कहा, ''महाराज जी, आ गए हैं।'' उसने अपनी आँखें खोली, मुझे देखा और उसके आँसू गालों तक बहने लगे। मैंने अपना हाथ उसके माथे पर रखा और कहा, ''जो हुआ सो हुआ। क्या तुम्हें धुन सुनाई देती है?'' उसने कहा, ''नहीं।'' मैंने फिर कहा, ''क्या तुम्हें प्रकाश दिखाई देता है?'' उसने कहा, ''नहीं।'' मैंने अपना हाथ उसके माथे पर रखकर कहा, ''बाहरी सभी चीजों को भूल जाएं।'' जब उसने ऐसा किया तो न केवल प्रकाश आया बल्कि गुरु का प्रकाशमान स्वरूप भी दिखाई दिया। उसके कान बंद किए गए और उसे धुन सुनाई दी। मैंने उससे कहा, ''अब खुश होकर जाओ।'' उसकी पत्नी वहाँ पर थी जो कि नामलेवा नहीं थी। उसकी पत्नी ने कहा, ''महाराज जी, मैं महसूस करती हूँ कि आपने इसे माफ कर दिया है और बचा लिया है लेकिन मैं चाहती हूँ कि जाने से पहले यह मुझसे बात करे।'' मैंने फिर से अपना हाथ उसके सिर पर रखा और उससे कहा, ''तुम्हारी पत्नी तुमसे कुछ बात करना चाहती है।'' उसने कहा ठीक है। वह अपनी पत्नी को देखकर मुस्कुराया और बोला, ''मैं अब जा रहा हूँ।''

जब आदमी का दिल टूट जाता है और उसे किसी तरफ से कोई आशा दिखाई नहीं देती तब सतगुरु आता है और उसे सभी मुसीबतों से

पार ले जाता है। जब शिष्य अपनी सारी चिन्ता, अहंकार और मोह को हटाकर अपने आपको गुरु पर न्यौछावर कर देता है तो वह पूरी तरह से गुरु की सुरक्षा में आ जाता है। अगर शिष्य गिरता है तो गुरु उसे उठाता है जिसके पास पूर्ण गुरु है वह डर से मुक्त है।

जब मैं लाहौर में था तो वहाँ की एक औरत जो मेरे गाँव की रहने वाली थी, वह बहुत ज्यादा बीमार हो गई और पुकार रही थी। उसका परिवार उसकी देख–रेख में सारी रात जागता। जब मैंने सुना कि वह बहुत ज्यादा बीमार है तो मैं दिलीप सिंह (जो बाद में सावन आश्रम का खजांची बना) को साथ लेकर उसके पास गया। मैंने उस परिवार के लोगों से कहा कि आप लोगों ने बहुत सी रातें जागकर बिताई हैं, आज आप सो जाएं मैं इनके पास बैठूंगा। मैंने दिलीप सिंह से कहा कि वह आराम करे और चार बजे आ जाए। मैं उस औरत के पास बैठा रहा।

अचानक उस औरत ने मुझसे कहा कि यहाँ एक बूढ़ा आदमी दिख रहा है। मैं उठा और उस बूढ़े आदमी को देखा तो बूढ़े आदमी ने मुझे बताया कि यह मेरी पोती है और मैं इसे ले जाने के लिए आया हूँ। मैंने उससे कहा कि जब तक मैं यहाँ बैठा हूँ वह ऐसा नहीं कर सकता। उसने आत्मा को शरीर से ले जाने की बहुत कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुआ। मैंने उस औरत से पूछा, ''क्या तुम इस बूढ़े आदमी को पहचानती हो?'' उसने कहा, ''हाँ, यह मेरे दादा थे, यह बहुत ही धर्मात्मा थे।''

कुछ समय बाद मृत्यु का दूत यमराज दरवाजे पर प्रकट हुआ जैसे ही मैंने उसकी तरफ देखा वह भाग गया, कमरे में दाखिल नहीं हो सका। उसने कई बार कोशिश की लेकिन अंदर नहीं आ सका। फिर मुत्यु का देवता धर्मराज खुद आया लेकिन वह भी कमरे में नहीं आ सका। धर्मराज बोला ''यह मेरी आत्मा है।'' मैंने कहा, ''यह सच है क्योंकि यह नामलेवा नहीं है लेकिन जब तक मैं यहाँ बैठा हूँ तुम इसे लेकर नहीं जा सकते। तुम

मेरे गुरु के पास जाकर उनसे पूछो कि क्या करना चाहिए? अगर मेरे गुरु इस आत्मा को ले जाने की आज्ञा देते हैं तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा।''

तब धर्मराज चला गया और कुछ ही मिनटों में वापिस आकर बोला कि मैंने इस आत्मा को ले जाने की आज्ञा ले ली है। मैंने कहा, ''ठीक है ले जाओ।'' वह बोला जब तक आप यहाँ बैठे हैं, मैं इस आत्मा को कैसे लेकर जा सकता हूँ? मैंने धर्मराज से पूछा कि मैंने जो सारी रात यहाँ बैठकर गुजारी है, उसका इसे क्या फायदा होगा? धर्मराज ने कहा इसे उसका लाभ मिलेगा। उसी समय दिलीप सिंह कमरे में दाखिल हुआ, मैंने दिलीप सिंह से कहा, ''अब हम कमरे से बाहर चलते हैं क्योंकि जब तक मैं यहाँ हूँ यह मर नहीं सकती।'' मैंने उसके पति से कहा, ''इसके नाम पर जो कुछ बकाया है, कुछ पैसे जरूरतमंदो को दे देना ताकि इसका लेन–देन पूरा हो जाए और यह शरीर छोड़ सके।'' दिलीप सिंह और मैं कमरे से बाहर निकले तो वह औरत एक ही पल में चली गई।

जिस जगह नामलेवा बैठा हो वहाँ यम या धर्मराज नहीं आ सकता। अफसोस की बात है कि आप लोगों को नाम की कीमत का पता नहीं। ज्यादा बातें करने से परमार्थ खराब होता है। आपको चुप रहकर नाम का सिमरन करना चाहिए। आप मुश्किलें पार कर जाएंगे, बोलने से पहले दो बार सोचें कि जो आप बोल रहे हैं वह सच है।

गुरु पावर का पूरा फायदा उठाने के लिए शिष्य को गृहणशील होना चाहिए। जब आपके अंदर गृहणशीलता उत्पन्न हो जाती है तो सारी असुविधा गायब हो जाती है, आप विश्वास की राह पर चलना शुरु कर देते हैं जो कि सही रास्ता है। हर कदम पर परमात्मा आपको राह दिखा रहा है, **परमात्मा** आपको तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक वह आपको आपके पिता के असली घर न पहुँचा दे।

हमारे गुरु कहा करते थे जिसने भक्ति के विषय को समझना हो वह किसी मरते हुए सच्चे शिष्य के सिरहाने बैठकर देखे कि उसकी किस तरह संभाल होती है। वह शिष्य मृत्यु को गृहण करते हुए आनन्दपूर्वक अपना शरीर छोड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी मेरे बारे में अक्सर कहा करते थे, ''इसने सातों समुंद्र पिए हैं फिर भी इसके होठ खुष्क हैं। इसने कई कविताएं लिखी हैं लेकिन जब यह यहाँ आता है तो यह एक मूर्ति की तरह खड़ा हो जाता है।'' प्रेम कैसे उत्पन्न होता है? प्रेम स्कूलों में नहीं सिखाया जाता, प्रेम खेतों में पैदा नहीं होता और न ही दुकानों पर बिकता है, प्रेम सिर्फ किरणों का प्रकाश फैलने से आता है।

आप अपने गुरु का साथ हजारों मील दूर बैठकर भी अनुभव कर सकते हैं। मेरे गुरु ब्यास में रहते थे और मैं लाहौर में रहता था। दिन के कुछ लम्हे जब मुझे मीठे और ठंडे महसूस होते, मैं वह समय लिख लिया करता था। अगले दिन जब मैंने किसी से पूछा कि महाराज जी उस समय क्या कर रहे थे? उत्तर मिलता कि उस समय महाराज जी आपको याद कर रहे थे। गुरु की शिक्षा सारे संसार के लिए होती है अगर सतगुरु बहुत पढ़ा–लिखा है तो वह हजारों तरीकों से अपनी शिक्षा को समझा सकता है। अगर वह पढ़ा–लिखा नहीं तो उसकी शिक्षा सीधी–सादी और साफ होगी।

कुछ साल पहले मैं अपने गाँव सैयद कसरां गया। वहाँ कुछ अकाली और कुछ दूसरे धर्म को मानने वाले भी थे। मैंने गुरुबानी के एक शब्द को लेकर सतसंग किया, ''हे परमात्मा! मैं दुनिया के साथ जुड़ा हुआ हूँ, तुम्हें कैसे देख सकता हूँ?'' वे लोग मेरी तरफ हैरानी से देखने लगे कि ये शब्द गुरुबानी में कहाँ पर है? शब्द स्पष्ट होते हैं लेकिन हम उनके असली मतलब को कभी नहीं समझते।

हर किसी का जीवन एक विज्ञापन की तरह होता है जो दूसरे लोगों को प्रभावित करता है। जैसे आप किसी का बुरा नहीं सोचते दूसरों की मदद करते हैं और जरूरत पड़ने पर अपना फायदा भी दूसरों के लिए त्याग देते हैं। अगर कोई आपकी भलाई नहीं करता तो भी आपको उसका भला ही करना चाहिए।

हमारे गुरु कहा करते थे, ''मैंने ऐसा कोई इंसान नहीं देखा जो बिना सोचे दान करे।'' अगर किसी को भंडार बाँटने की ड्यूटी मिलती है तो हर जरूरतमंद को देना उसकी ड्यूटी है लेकिन आप उन्हें देते हैं जो आपकी इज्जत करते हैं। जो आपको मान नहीं देते आप उनसे कहते हैं कि वे दूर रहें, आप कोशिश करते हैं कि आप उन्हें कुछ भी न दें।

जिन्हें नाम मिला हुआ है, उनका फैसला धर्मराज नहीं सतगुरु करता है। जिस बेटे ने कुछ गलत किया है उसका पिता उसे थप्पड़ मारेगा लेकिन उसे पुलिस के हवाले नहीं करेगा। जो सतगुरु के प्रति वफादार हैं वे कभी नर्क में नहीं जाएंगे। अगर सतगुरु आपको फिर से जन्म देते हैं तो आपको अच्छे घर में जन्म देंगे ताकि आप तरक्की कर सकें।

पिछले साल इग्लैंड, जर्मनी और अमेरिका के टूर पर मुझसे पूछा गया, ''हम परमाणु युद्ध से कैसे बच सकते हैं?'' मैंने उन लोगों से कहा, ''अगर हम वेदों के कहे अनुसार चलें तो हम इस युद्ध से बच सकते हैं।'' हम महापुरुषों के बताए उपदेश के अनुसार नहीं जीते। शब्द को मानने वाले बनें, अपने आपको धोखा न दें। युधिष्ठिर की तरह जीना सीखें।

कहा जाता है कि पाँचों पांडवो को एक ही गुरु से शिक्षा मिली थी, उस गुरु ने उन्हें एक किताब दी। उस किताब में लिखा था कि सच बोलें, क्रोध न करें। युधिष्ठिर को छोड़कर चारों पांडवों ने वह किताब याद कर ली। जब युधिष्ठिर की बारी आई तो उसने कहा, ''गुरु जी! मैंने पहला वाक्य सच बोलें पूरा सीख लिया है लेकिन दूसरा वाक्य क्रोध न करें अभी

आधा ही सीखा है।'' गुरु को बहुत क्रोध आया। गुरु ने कहा, ''मैं राजा को क्या जवाब दूँगा कि दो–तीन महीनों में इसने केवल एक वाक्य पूरा और दूसरा वाक्य अधूरा सीखा है।''

गुरु ने युधिष्ठिर को थप्पड़ मारने शुरु कर दिए और कहा कि तुम मुझे सच क्यों नहीं बता रहे? युधिष्ठिर ने कहा, ''मैंने आपको सच ही बताया है कि मैंने एक ही वाक्य सीखा है कि सच बोलो और दूसरा वाक्य क्रोध न करो आधा ही सीखा है। जब आपने मुझे थप्पड़ मारे तो मेरे मन में क्रोध आया।'' हम जब तक युधिष्ठिर की तरह जीना नहीं सीख लेते तब तक हमारे जीवन में कोई तरक्की नहीं हो सकती। जो खाना हजम होता है वही ताकत देता है। हमने जो सीखा है अगर हम उस पर अमल करेंगे तो परमाणु युद्ध के खतरे से बच सकते हैं।

आध्यात्मिक भक्ति में रूचि रखने वाले व्यक्ति को गुरु का चुनाव करते हुए बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। गुरु का उपदेश पवित्र होता है उन पर ही सख्ती की जाती है जो सच्चाई के प्रति ईमानदार होते हैं। भक्ति मार्ग पर चलने वाले को खान–पान के नियमों का पालन करना चाहिए। जब कोई आपके रास्ते में आए तो आप खुद ही पता लगा सकते हैं कि वह किस तरह का इंसान है अगर वह भक्ति मार्ग का चाहवान है और आपसे मदद चाहता है तभी आप उस विषय पर उससे बात करें। ज्यादातर लोग सच के चाहवान नहीं होते, वे बहस करने वाले होते हैं। दुनियावी लोगों के सामने मोती फैंकने का कोई फायदा नहीं ऐसे लोगों से बचना ही ठीक है।

जब सतपुरुष, सतगुरु का चोला पहनकर संसार में असहाय और निराश आत्माओं को बचाने के लिए आता है और उन्हें सच्चे घर का रहस्य बताता है, उस समय काल पुरुष धरती पर अपने साम्राज्य को बचाने के लिए वैसा ही वेश और भाषा का प्रयोग करता है। आप जब भी किसी अंजान से मिलें उस समय आपको बहुत ही सावधान होना चाहिए।

आप जानते हैं कि मेरे मन में आपके लिए कितना प्रेम है अगर आपके दिल में किसी के लिए गुस्सा है तो आप वह गुस्सा मुझे भेज दें। जो कुछ भी अच्छा नहीं है उसे ध्यान करके कूड़ेदान में फैंक दें। जब एक–दूसरे को देखें तो प्रेम और मित्रता से काम लें, यह आपकी मदद करेगा। जब दो शिष्य मिलते हैं तो **परमात्मा** गुरु की याद का नशा चढ़ता है।

मैं आपको बताता हूँ कि अहिंसा, सत्य, शुद्धता, आदर और सेवा पाँच शीर्षक हैं। सभी का आदर करें क्योंकि परमात्मा हर हृदय में रहता है। किसी की भावनाओं को सोच, समझ और कर्म से ठेस न पहुँचाए। अगर हम एक सप्ताह एक शीर्षक पर और दूसरे सप्ताह दूसरे शीर्षक पर ध्यान दें तो इस तरह हम पाँच सप्ताह में पाँचों शीर्षक के अनुसार अपनी जिंदगी ढ़ाल सकते हैं।

ज्ञान की प्राप्ति व्यवहारिक इंसान के गले में पड़ी हुई एक फूलों की माला है, वह कई तरीकों से समझाता है। वह जो भी तरीका अपनाएगा उसे साबित करने के लिए कुछ कहेगा लेकिन बिना अभ्यास का ज्ञानी एक पुस्तकालय जैसा ही होता है।

आप लोग मेरे संपर्क में रहें अगर **परमात्मा** चाहेगा तो वह आपमें से किसी एक को गुरु बना सकता है। यह चुनाव वोट देकर किसी को प्रेजीडेंट या मिनिस्टर बनाने का मामला नहीं है। यह परमात्मा का चुनाव है कि उसने किसके कंधो पर यह जिम्मेदारी सौंपनी है।

एक और बात जिसमें मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता लेकिन इस राह पर चलने वाले प्रमियों के फायदे के लिए ध्यान दे सकता हूँ। अगर आप कभी ऐसा महसूस करते हैं कि कहीं आपके साथ पक्षपात हो रहा है तो आप अपने आपको सीमित कर लें और शिष्टाचार से काम लें। भावुकता की लहरों में न बहें, विनम्रता ही पहला और आखिरी श्रृंगार है जो ऊँची आत्मा को सजाता है।

मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ हैं। मुझे ज्यादा खुशी इस बात से होगी कि आप आध्यात्मिक राह पर टिकने और एक–दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे, जिससे देखने वाले आपसे प्रेरणा लें और आपकी सराहना करें।

गुरु नानक देव जी ने जब अपना घर–संसार छोड़ा तो उनकी पत्नी और दो बेटे थे। गुरु नानक देव जी दुनिया में परमात्मा का संदेश देने गए तो दुनियावी लोगों ने गुरु नानक देव जी से कहा, ''आप यह क्या कर रहे हैं, आपने घर–बार क्यों छोड़ दिया है?'' गुरु नानक देव जी ने कहा, ''देखो, सारी इंसानियत ही मेरा परिवार है।''

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

भ्रम

भक्त नामदेव जी परमगति को प्राप्त हुए परम सन्त थे। उनका पिता मूर्तियों की पूजा किया करता था। वह कटोरी में दूध डालकर मूर्ति के आगे रख देता फिर घंटी बजाता और जो कुछ भी रीति–रिवाज होता वह सारा कुछ ही करता था। एक दिन पिता को किसी काम से बाहर जाना पड़ गया। पिता ने नामदेव की ड्यूटी लगाई कि तूने मूर्तियों को दूध पिलाना है और भोग लगवाना है।

नामदेव भोला बच्चा था, उसने कटोरी में दूध डालकर ठाकुर के आगे रख दिया, उसे यह पता नहीं था कि मेरा पिता ठाकुर से भी ठग्गी करता है। वह ठाकुर के आगे दूध रखकर खुद ही पी जाता है। जिस तरह हमारे सिख भाई करते हैं, वे अपनी तरफ से परमात्मा समझकर प्रशाद नीचे रख देते हैं और बाद में उसे खा जाते हैं। नामदेव को इस बात का पता नहीं था, उसने ठाकुर के आगे से कटोरी नहीं उठाई। मूर्ति ने क्या दूध पीना था। वह हठ करने लगाः

दूध पिओ, दूध पिओ गोबिंद राय नहीं तो घर का बाप रूसाए।

हे ठाकुरों, अगर तुमने दूध नहीं पीया तो मेरा पिता मुझसे नाराज हो जाएगा। नामदेव जी बहुत परेशान हुए। आखिर उन्होंने देखा कि यह सब कुछ गुड़ियों वाला खेल है। नामदेव जी ने हथौड़े से सारी मूर्तियों को तोड़ दिया और हथौड़े को बड़े बुत के कंधे के साथ लगाकर रख दिया।

जब पिता वापिस आया, उसने बुतखाने का हाल देखा तो नामदेव से कहा, ''तूने यह क्या किया, तूने बहुत बुरा किया है?'' नामदेव जी ने कहा, ''मैंने यह सब नहीं किया, जब आप चले गए तो मैंने इनके आगे

दूध रखा ये आपस में लड़ने लगे कि दूध मैंने पीना है, दूध मैंने पीना है। सबसे तगड़े ठाकुर ने सबको मार दिया, देखो, हथौड़ा इसके पास ही है।

सच्चाई अपने मुँह से बोल पड़ती है। नामदेव के पिता ने कहा, ''कभी पत्थर भी लड़े हैं, कभी पत्थर भी बोले हैं?'' नामदेव ने कहा, ''अगर ये पत्थर बोल नहीं सकते, कुछ खा पी नहीं सकते तो ये पत्थर आपको क्या मुराद देंगे? ये **भ्रम** है।''

भक्त नामदेव के दिल को चोट लगी, उन्होंने पूर्ण गुरु की खोज की। गुरु की शरण में जाकर 'शब्द–नाम' की कमाई की और वे अपनी जिंदगी में पूर्ण हुए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को विदाई संदेश

विदाई संदेश

02 जुलाई 1980 मसाचुसेटस, अमेरिका

हां भाई,

आपको पता है कि प्रेमियों ने मिल–जुलकर इस जगह जो कार्यक्रम रखा था, वह कार्यक्रम अब समाप्त है। जिन लोगों ने यहां आकर सतसंग सुना और भजन–अभ्यास किया, हम उन सबके धन्यवादी हैं। कार्ल रायली और जिन भी प्रेमियों ने मिलकर यह कार्यक्रम किया, सेवा की, हम उन सबके भी धन्यवादी है।

आपको पता है कि हमने जो यह कार्यक्रम किया है, वह समाप्त नहीं बल्कि शुरु हुआ है। मन कितना सख्त और हठीला है, इसके साथ हमारा वास्ता पड़ता रहता है। आपने आपस में प्यार रखकर सतसंग चलाना है, एक–दूसरे की इज्जत करनी है, मन को कभी अशांत नहीं होने देना। अगर मन को शांत करने का कोई ठिकाना है तो वह साध–संगत है।

सतसंग में आना जितना जरूरी है उतना ही जरूरी है कि हम जो कुछ सतसंग में सुनते हैं, उस पर अमल करें। अशांत मन खुद तो दुखी होता ही है, अपने आस–पास वालों को भी दुखी करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मन के कहने पर ही हम रिश्ते–नाते करते हैं। एक–दूसरे से झगड़ा करते हैं, किसी से दोस्ती करते हैं और किसी से दुश्मनी करते हैं। हम इस संसार मंडल पर जो कुछ भी करते हैं, वह सब मन के कहने पर ही करते हैं। हमने मन को ही अपना गुरु–पीर, खसम–खुसाई समझा हुआ है अगर मन को 'शब्द–नाम' की लज्जत दी जाए, प्यार से समझाकर इसे इसके घर ब्रह्म में पहुंचाया जाए तो यह मन आपका मित्र बन सकता है।''

जो मन आपको अशांत करके मुसीबत में फंसाता है, वही मन आपका दोस्त बनकर आपके लिए अच्छा काम कर सकता है और अच्छी नेक सलाह दे सकता है।

मैं आशा करता हूं कि आप सब मिल–जुलकर सतसंग चलाएंगे। सतसंग में जो कुछ सुनते हैं उस पर अमल करेंगे ताकि मन को थोड़ी बहुत ठोकर लगती रहे। अगर हम इस मन को समझाते रहें तो यह परमार्थ की तरफ लगा रहता है। ***

मिलो कृपाल प्यारेया, तैनूं दिल दा हाल सुणावां, x 2

1 दुखां विच पै गई जिंदड़ी, तैथों बिना शांत ना होवे,
बिरहों दे तीर वजदे, तेरी याद आई तां दिल रोवे, x 2
तैथों बिना मेरा कोई ना, जीहनूं दिल दा भेद बतावां,
मिलो कृपाल प्यारेया.....

2 याद तेरी आवे सोहणया, जदों शरण तेरी विच बैहंदे,
तन–मन होवे उजला, जदों बोल मिठड़े सुण लैंदे, x 2
दस्सां कीहनूं दिल फोल के, तेरे अग्गे वास्ते पांवां,
मिलो कृपाल प्यारेया.....

3 दया कुल मालिक दी, बण रूहां दा व्यापारी आया,
मौज होई सावन दी, सच्चे नाम दा भंडारी लाया, x 2
हरदम चाह दिल नूं, तेरे चरणां दी धूड़ी विच न्हावां,
मिलो कृपाल प्यारेया.....

4 बेड़ा भवसागर चों, सतगुरु जी बन्ने लावो,
अरजां 'अजायब' कर दा, जीवां नूं पार लंघावो, x 2
होर कुछ मंगदा नहीं, नूरी दर्शन तेरा चाहवां,
मिलो कृपाल प्यारेया.....

RNI No - RAJHIN/2003/9899

जिस जगह नामलेवा बैठा हो वहाँ यम या धर्मराज नहीं आ सकता। अफसोस की बात है कि आप लोगों को नाम की कीमत का पता नहीं। ज्यादा बातें करने से परमार्थ खराब होता है। आपको चुप रहकर नाम का सिमरन करना चाहिए। आप मुश्किलें पार कर जाएंगे, बोलने से पहले दो बार सोचें कि जो आप बोल रहे हैं वह सच है।